REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

प्रेमचंद मेरे शब्दों में

Smti Nita Samadder[1] , Dr. Gouri Bepari[2] and Dr. Parbati Bepari[3]
[1] MA(Hindi) and UGC NET.
[2]Resouce Person, Dept of Economics, MGGC Mayabunder.
[3]Resouce Person, Dept of Economics, MGGC Mayabunder.

सामान्य सारांश

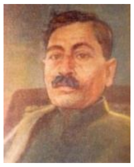

प्रेमचंद जी भारत वर्ष के अमर कथाकार है। उनका जन्म ३१ जुलाई सन् १८८० को बनारस के लम्बी गाँव में हुआ था तथा उनकी मृत्यु ६ अक्टूबर १९३६ को जलोदर रोग के कारण हुआ। इस लेख में प्रेमचंद का बचपन से लेकर कर मृत्यु तक के सभी घटनाओं और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है उनका जीवन, बाल्यकाल, व्यक्तित्व का विकास, शिक्षा, साहित्य जगत में आगमन, साहित्यिक रूचि रचनाएँ आदि का संक्षिप्त में संपूर्ण विवरण दिया है। प्रेमचंद ने जीवन को जैसा देखा वैसा ही चित्रित किया। उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले प्रेमचंद हमारी भाषा के कालजयी रचनाकार है और इनकी क्लासिक का दर्जा प्राप्त है।

यह लेख उनके अमर व्यक्तित्व को हिंदी जगत मे उजागर करने का प्रयास ही नहीं बल्कि शिक्षार्थियों के समुख मंशी प्रेमचंद को जनने का सहज सुसंगठीत सक्षिप्त साधन है।

संकेत शब्द :जी दियावन सधर्ष, व्यक्तित्व का विकास, साहित्य में योगदान, सामाजिक चेतना

जन्म

प्रेमचंद जी का जन्म लगभग उस समय हुआ जब 'इण्डियन नेशनल कांग्रेज(१९५०) का हुआ। कांग्रेस का जन्म इस बात का प्रत्यक्ष परोक्ष स्वीकृति करता थी कि देश में स्वतंत्रता की लहर काफी सशक्त उस समय की आवोहावा मे थी। उसी आवोहावा मे प्रेमचंद जी का जन्म ३१जलइ १८८० में लम्बी गाँव, जो उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ प्रेमचंद के पिताजी 'मुंशी अजायब लाल' और माता आनन्द देवी' थी। माता- पिता दोनों को सत्रहवी की बीमारी थी। तीन साल बाद आपको ज़िलाबांदा जाना पड़ा। प्रेमचंद का बचपन गाँव में बीता था। वह डाकखाने मे मामूली नौकर के तौर पर काम करते थे उनका बहुत बड़ा परिवार तथा बेतन मात्र ५ रूपये इसी वेतन पर उनका परिवार को इसी पर गुजारना पढ़ता था।

जीवन

'धनपतराय' प्रेमचंद जी का बचपन का नाम था। जब धनपतराय मात्र ८ वर्ष के थे उनके माता का देहात हो गया जिसके बाद उनके जीवन में कष्टों ही टूट पड़ा। उनके जाने के बाद जीवन उनके विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनके पिताजी ने मात्र दो वर्ष के अवधी के बाद दूसरी विवाह कर लिया। जिसकी वजह से वे प्रेम व स्नेह से वे वहीं मोक्ष गए। उनकी सौतेली माँ का व्यवहार बहुत खराब था। इसके अलावा अपने घर में भयंकर गरीबी, पहनने के लिए कपड़े न होते थे और न ही खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिलता था उनके जीवन में विमाता का अवतरण हुआ।प्रेमचंद के इतिहास में विमाता के अनेक वणन है।यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद के जीवन में माँ के अभाव की पूर्ति विमाता द्वारा न हो सकी थी।वइस के

अतिरिक्त घर में सौतेली माँ का अत्यचार जो जीवन को और भी अधिक दयनीय और कष्टकारी बना दिया। सुधार हुई उनकी लेखक में अधिक सजगता आई साथ में ही पदोन्नति हुई। वे विधालय के डिप्टी इन्सपेक्टर बन गए।

शिक्षा

जीवन के सुरूवाद में ही उन्हें गाँव से दूर बनारस पढने के लिए नंगे पाँव जाया करते थे।वे अपनी गरीबी अवस्थ से लड़ते हुए ही अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुँचाई। इसी बीच उनकी पिता का देहात हो गया। उन्हें पढ़ने का शौक था। आगे चलकर वकील बनना चाहते थे। परन्तु गरीबी के कारण ना हो सका। इसके बाद विधालय दूर होने के कारण वही वे एक-एक वकील साहब के वही रहते थे। इसमें सावकील साहब के वहा ५ रूपये वेतन पर ट्यूशन लिया और वे वही रहते थे। इसमें से ३ रूपये घर भेजते और २ रूपये अपने लिए रखते। प्रेमचंद इन्हीं कठिन परिस्थितियों में ही अपना मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविधालय से अंग्रेज़ी साहित्य, पर्शियन (फारसी) और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त इंटरमीडिएट कक्षा में भी उन्होंने अग्रेज़ी साहित्य का एक विषय भी लिया था।

व्यक्तित्व

प्रेमचंद बहुत ही साधारण जीवन यापन करते थे। वे अपने जीवन में सदा प्रसन्न तथा मस्त रहते थे। उन्होंने अपना जीवन बहुत कठिन परिस्थितियों से होते हुए गुजारा पर कभी हार नहीं मानी और जिवन की खेल बाजी जीत लिया।

उन्होंने एक पत्र में ***मेरी दयानारायण निगम*** को एक लिखा जिसमें:-हमारा काम तो केवल खेलना है -खूब दिल लगा कर खेलना- खूब जी तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना। मानों हम दोनों लोकों की संपत्ति खो बैठेंगे

प्रेमचंद कहते है कि- " मेरे जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं- कहीं गढ़े तो है, पर टीलों, पवतों, धनेश, जंगलों, गहरी घाटियों और खण्डहरों का स्थान नहीं है जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन है उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी।”

प्रेमचंद का हदय मित्रों के लिए उदार भाव था वही उनका हदय गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का महासागर था। वे एक महान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। उनका मानवता उच्चकोटि का था। वे हमेसा सादा लिवास में रहते थे। अपना ज्यादातर जीवन गाँव में ही बिताया। जैसे उनकी पत्नी कहती थी " कि जाड़े के दिनों में चालीस चालीस रूपये दो बार दिए गए दोंनो बार उन्होंने वह रूपये प्रेस के मजदूरों को दे दिये। मेरे नाराज होने पर उन्होंने कहा कि का इसांन है कि हमारे प्रेस में काम करने वाले मजदूर भूखे हो और हम गरम सूट पहने।"

साहित्यिक रूचि

प्रेमचंद जी लिखने पढ़ने में बाल्य अवस्था से ही रूचि थी। वे जीवन की कितनी भी कठिन अवस्था जैसे गरीबी, अभाव शोषण तथा उत्पीड़न हो किन्तु उनके साहित्य की ओर झुकाव को रोक ना सका। उनको उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी का प्रारंभ से ही ज्ञान था। प्रेमचंद जब मिडिया में थे तभी से आपने उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। उर्दू का ज्ञान उन्हें आपने बाल्य काल से ही थी और आपनी नॉवल और उर्दू उपन्यास का ऐसा पागलपन छाया कि वे एक बुकसेलर की दुकान पर बैठकर ही सब नॉवल पढ़ गए। अपने जीवन के दो यह तीन वर्षो के भीतर ही सैकड़ों नॉवल पढ़ डाल।

इसके अलावा वे बचपन में ही उर्दू के समकालीन उपन्यासकार "सरूर होला शारीरिक", रतन नाथ सरकार आदि के दीवाने हो गये कि जहाँ भी इनकी कितना मिलती पढ़ लेते। अपनी इसी समावेश के कारण वे एक किताब पढ़ के लिए एक तम्बाकू वाले से दोस्ती कर ली और। उसकी दुकान पर मौजूद" तिलस्मे- होशरूबा" पढ़ डाली।

वे अंग्रेजी के आपने जमाने के मशहूर उपन्यासकार " रोनाल्ड"की किताबों को उर्दू तरजूमो को आपने काफी कम उम्र में ही पढ़ लिया।

प्रेमचंद जी ने बहुत बड़ी- बड़ी किताबों, उपन्यासकार, साहित्यकारो को पढ़ने के बावजूद भी अपने मार्ग को अपने व्यक्तिगत विषय जीवन अनुभव तक ही महदूद रखा। उन्होंने मात्र तेराह साल की उम्र में ही लिखना आंरभ कर दिया। आपने जीवन और साहित्य दोनों में ही प्रेमचंद संपूर्ण रूप में जनवादी थे। वे अपनी देश की लोगों को अच्छी प्रकार से जानते थे। वे उनका सम्मान तथा आदर भी करते। वे अपना कलम की शक्ति को जनता के हित में लड़ने वाली चमकदार तलवार के रूप में करते थे उन्होंने अपनी कमल की शक्ति का प्रयोग जनता के सभी विषयों जैसे चाहे वे राजनीति हो, चाहे आर्थिक, चाहे सामाजिक, किसी बात के अच्छे बरे की उनकी एक और अकेला कसौटी यह थी कि उससे जनता को फायदा पहुचता या चोट लगती है इसलिए उनकी रचनाओं में हमे एक व्यावहारिक ढंग का समाज वाद दिखाई पड़ता है।

जीवन में जनवादी साहित्य मे यथार्थवादी प्रेमचंद ने जीवन को जैसे देखा वैसा ही उसे चित्रित किया। उन्होंने रोमांस के इन्द्रधनुषी रंगों या अध्यात्मवाद के खाकी रंगों को सत्यदशर्न में बाघको नहीं होने दिया इसीलिए उनका चत्रिण इतना सठीक सच्चा और प्रभावोत्पादक है

बनारसी दास चतुर्वेदी जी के द्वारा कहा गया है कि प्रेमचंद जी के सिवा भारत की सीमा उल्लघंन करने की क्षमता रखने वाला कोई दूसरा हिन्दी कलाकार इस समय हिन्दी जगत मे विघमान नहीं है और आज भी जब कि उनकी रचनाएँ अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त कर चुकी है। मुझे वही वाकृय दुहराना पड़ता है।

भले ही कुछ मनचले आपने को प्रेमचंद या गोर्की के मुकाबले का समझे पर यह उनकी अहम्मन्यता ही है। प्रेमचंद अद्वितीय थे, और चिरकाल तक अद्वितीय ही रहेंगे। वैसे हिन्दी माता के एक से एक योग्य सपूत को जन्म देती रही है और भविष्य में भी वह गोद सूनी न होगी, पर प्रेमचंद अपने ढंग के निराले थे और उनकी बराबर नहीं कर सकता है।

प्रेमचंद जी एक सच्चे देश भक्त भी थे वे अपनी सभी रचनाओं, लेखों, कहानियों और उपन्यासों मे समाज, देश, जनता, लोगो कि किसी ना किसी मुद्दो को उठाया है उसका विरोध भी किया। उन्होंने साहित्य के माध्यम से जनमानस के शेष, क्रोध को व्यक्त किया था और जनता के पथ प्रदर्शक के रूप मे स्थापित किया। इनकी रचनाओं से उनकी प्रतिभा, लग्न और अध्यवसाय पर हे आश्चर्य होता है उनमें जन्म से ही एक साहित्यिक थे इन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर सन् १९२० ई० मे अपनी नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद साहित्य लेखन के साथ पत्रपत्रिकाओं का सम्पादन और प्रकाशन का कार्य भी किया था।

प्रेमचंद की कृतियाँ

प्रेमचंद साहित्य का सुरूवाद समाज के साधारण विषयों को ले कर लेखन का कार्य किया। उनकी हर एक कहानी, उपन्यास में समाज कि किसी ना किसी समस्या का उल्लेख मिल ही जाता है साथ ही उनमें देश प्रेम की भावना से प्रेरित होते हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में कुल ३०० लघु कथाएँ और १४ उपन्यास बहुत से निबंध और पत्र भी लिखे है।इसके अलावा प्रेमचंद बहोत से बहु- भाषिक साहित्य का हिन्दी अनुवाद भी किया है। उनके बहुत सारे प्रसिद्ध रचनाओं को तो उनके मृत्यु के बाद इंग्लिश अनुवाद भी किया गया है।

मात्र १३वर्ष की आयु मे उन्होंने लेखन का कार्य सुरू किया १८९४ में " होनहार बिरयानी के चिकने- चिकनेपात" नामक नाटक की रचना किया। प्रेमचंद जी विधवा विवाह का समर्थक थे। वे विघवाओ की अवस्था समाज मे सुधारने के लिए कार्य किया। इन्होंने "१९०२ मे प्रेमा" और "१९०४-९५ मे हम- खुर्जा व हम- सवाब"नामक उपन्यास लिखा। इन उपन्यासों में विघवाओ जीवन और विघवा- समस्या का चित्रण किया है।

घनत्व राय ने अपना पहला लेख 'नवाब राय' ने नाम लिखा था। उनका पहला लघु उपन्यास 'अपराध ए मा' बिदा (जो हिन्दी में- देवस्थान रहस्ह) था। इसके इन्होंने मंदिरों मे पुजारियों द्वारा की जा रही लुट- पात और महिलाओं के साथ किये जा रहे शारीरिक शोषण के बारे मे बारे में बताया गया है। ८ अक्टूबर १९०३ में उनके सारे लेख और उपन्यासों को 'फेब्रुअरी १९०५ तक बनारस पर आधारित उर्दू साप्ताहिक 'आवाज-ए- खलकफ्रोम में प्रकाशित किये थे। प्रेमचंद ने '१९०१' मे उपन्यास लिखना शुरू किया। इसके लगभग ६ बाद '१९०७' में कहानी लेखन सुरू किया। सोते वतन से ही अर्थ व्यक्त होता 'वतन का दर्द'। इसमे पांच कहानियों का सग्रह मिल जाता है। इसमे देश प्रेम और देश की जनता के दर्द को लेकर लिखा गया है। इसमे अंग्रेज शासकों के प्रति देश का बगावत की झलक मिलती है। इस रचना से क्रोधित हो का अग्रेज शासक ने इस कृति को जलाकर दिया और बिना आज्ञा के लिखने को मना कर दिया। इसके बाद इन्हें अपना छद्म अपनाना पड़ा। इस समस्या के विषय में प्रेमचंद 'दया नारायण निगम को पत्र लिखा और फिर निगम के झुकाया गया नाम से "प्रेमचंद" से लेखन किया। इसके बाद '१९१०' के स्वतन्त्रता सग्राम के दिनों मे लिखा गया। '१९२३ ' मे उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की, १९३० मे हंस का प्रकाशन किया और हंस, जागरण तथा माधुरी(१९२२) पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

इसके अलावा समाज की व्यवस्था पर चोचोट करते हुए इन्होंने " सेवा सदन", " मिल मजदूर" और " गोदान (१९३५) "उपन्यास है। अपने जीवन के अंतिम दिनों मे " मगलसूत्र का आरंम्भ किया परन्तु उसको पूरा नहीं कर पाए और अधूरा ही छोड़ गए। १० अनुवाद, ७ बाल- पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठोंके लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना किया।

उसके बाद ६: साल तक माधुरी नामक पत्रिका मे संपादन का काम किया। १९३० से १९३२ के बीच उन्होंने अपना खुद का मासिक पत्रिका हंस एवं साप्ताहिक पत्रिका जागरण निकलना शुरू किया। उसके कुछ अवधी के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने मुबंई में फिल्म के लिए कथा भी लिखा। उनकी कहानी पर बनी फिल्म का नाम " मजदूर १९३४" में प्रदर्शित हुआ। लेकिन वे इस दुनियाँ मे कुछ ही दिनों तक रूके उसके बाद उनअपने काटैक्ट को पूरा किये बिना ही अपने शहर बनारस लौट आए। फिर प्रेमचंद ने सपूण रूप से १९१५ से कहानियों का लेखन किया। उनकी पहली हिंदी कहानी १९२५ मे सरस्वती पत्रिका सौत नाम से प्रकाशित हुई और उससे पहले १९१८ मे उपन्यास का नाम सेवा सदन है। प्रेमचंद ने लगभग १२ उपन्यास, तीन सौ के करीब कहानियाँ कई लेख एंव नाटक लिखे। वे सही अर्थो मे उपन्यास समराट थे।

रचनाएँ

उर्दू उपन्यास का रूपान्तरित हिंदी में

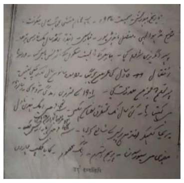

जल्द इर्सार- वरदान (१९२१)
हमखुर्मा व हम सवाब- प्रेमा
दो सखियों-प्रतिज्ञा(१९२९)

उपन्यास

सेवासदन (१९१८)
वरदान (१९२१)
प्रेमा श्रम(१९२२)
रंगभूमि(१९२५)
कायाकल्प (१९२६)
निर्मला (१९२७)
प्रतिज्ञा (१९२९)
कर्मभूमि(१९३२)
गोदान (१९३५)
मंगलसूत्र (अपूर्ण)

नाटक

सग्राम (१९२३)
कबला (१९२४)
प्रेम की वेदी (१९३३)

कहानियाँ

अन्धेर
अनाथ लड़की
अपनी करनी
अमृत
अलग्योझा
आखिरी मंजिल
आखिरी तोहफ़ा
आत्म-संगीत
आत्माराम
दो बैल की कथा
आल्हा
इज्जत का खून
इस्तीफा
ईदगाह
ईश्वरीय न्याय
उद्धार
एक आंच की कसर
एक् एक्टेस
कप्तान साहब
कर्मों का फल
क्रिकेट मैच
कवच
कातिल
कोई दुख न हो तो बकरी खरीद ला
कौशल

खुदी
गैरत की कटार
गुल्ली डण्डा
घमण्ड का पुतला
ज्योति
जल
जुलूस
झांकी
ठाकुर का कुंआ
तेंतर
त्रिया- चरित्र
तांगे वाले की बड़ी
दण्ड
देवी
देवी एक और कहानी
दूसरी शादी
दिल की रानी
दो सखियाँ
धिक्कार
धिक्कार एक और कहानी
नेउर
नेकी
नब़ी का नीति- निवाह
नरक का मार्ग
नैराश्य लीला
नशा
नसीहतों का दफ्तर
नाग- पूजा
नादान दोस्त
निवासन
पंच परमेश्वर
पत्नी से पति
पुत्र-प्रेम
पैपुजी
प्रतिशोध
प्रेम- सूत्र
पवत-यात्रा
प्रायश्चित
परीक्षा
पूस की रात
बैंक का दिवाला
बेटोंवाली विधवाओ
बड़े घर की बेटी
बंड़े बाबू
बड़े भाई साहब
बंद दरवाजा

बांका जमीं
बोहनी
मैंकू
मन्त्र
मन्दिर और मस्जिद
मनावर
मुबारक बीमारी
ममता
माँ
माता का ह्रदय
मिलान
मोटे राम जी शास्त्री
स्वर्ग की देवी
राज्य
राष्ट्र का सेवक
लैला
वफ़ा का खंजर
वासना की कड़ियाँ
विजय
विश्वास
शंखनाद
शूद्र
शराब की दुकान
शान्ति
शादी की वजह
स्त्री और पुरूष
स्वर्ग की देवी स्वांग
सभ्यता का रहस्य
समर यात्रा
समस्या
सैलानी बंदर
स्वामिनी
सिर्फ एक आवाज
सोहागपुर का शव
सौत
होली की छुट्टी
नमक का दरोगा
गृ ह दाह
सवा सेर गेहूँ नमक का दरोगा
दुध का दाम
मुक्तिघन
कफ़न

कहानी संग्रह

नवनीधि

आत्मकथा

मेरी जीवन साथी

पत्र- पत्रिका

हंस (जनवरी १९३०)

जागरण (१२ दिसंबर १९32)

मृत्यु

प्रेमचंद जी अपनी जीवन के अंतिम वर्ष १९३६ में बीमार रहने लगे। इस बीमारी के बावजूद भी वे "प्रगतिशील लेखक संघ" की स्थापना में सहयोग दिया। उनकी आर्थिक अवस्था भी ठीक ना थी इसी आर्थिक कष्टों और अपना इलाज भी ना कराये जाने के कारण उनका ८ अक्टूबर १९३६ को जलोदर रोग से उनका देहावसान हो गया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य का दीप सदा के लिए बुझ गया। जिसने अपने जीवन के बत्ती का कण- कण जलाकर हिन्दी साहित्य का मार्ग आलोकित किया।

शिवरानी देवी का कहना है कि:-

स्वामी, तुम्हारी ही चीज
तुम्हारे चरणों में चढ़ाती हूँ
इस तुच्छ सेवा को अपनाना
तुम्हारी
दासी या रानी।

प्रेमचंद जी का अंतिम वाक्य

"प्रेमचंद जी के सत्संग में एक अजीब आकषर्ण है। उनका घर एक निष्कपट आडम्बर- शून्य सदगृहस्थ का घर है और यूपी प्रेमचंद जी काफी प्रगतिशील है- समय के साथ बराबर चल रहे हैं- फिर भी उनकी सरलता तथा विवेकशीलता थे उनके गृह जीवन के सौन्दर्य को अक्षुण्ण तथा अविचलित बनाये रखा है।"

निष्कर्ष

"प्रेमचंद मेरे शब्दों में" इसमें प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन के रूप- रेखा आकृति किया गया है। प्रेमचंद के बारे में बोला जाए वहा कम है लेकिन मैंने इस कार्य के द्वारा प्रेमचंद के प्रति एक नवजागरण के रूप मे रूचि उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इसे पढ़कर कोई भी उनके बारे मे रोमानिया ढंग से जान जाएगे। बहु- किताबो और अन्य स्रोतों को सम्मलित कर के अपनी भाषा मे इसे प्रस्तुत करने का प्रयास है।

अत: कोई भी पाठक इसे एक सक्षिप्त लेकिन संपूर्ण जीवनी के रूप में प्राप्त होगा।

सर्दभ

- सतेन्द्र (२००९) प्रेमचंद (अलोचना), ISBN: 978-81-8361-308-8, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रारम्भ. ली. नई, दिल्ली।
- शिवरानी देवी प्रेमचंद, श्रद्धांजलि, बनारसी दास चतुर्वेदी (२००८), प्रेमचंद घर में, ISBN:81-7043-473-4, आत्माराम एण्ड संसद, दिल्ली।
- भारतडीसकवरी. ओ आर जी/www.bharatdiscovery.org
- भारत- दर्शन हिंदी साहित्य पत्रिका
- भारत दर्शन. को. एन. जेड/www.bharatdarshan. co.nz
- संकलन और संपादन डॉ विमल खांडेकर अक्टूबर (पुनर्मुद्रित), हिंदी कहानी विवेचना ISBN-81-266-04581 ।

Smti Nita Samadder
MA(Hindi) and UGC NET.